

Padma Shri



PROF. JAIBHAGWAN GOYAL

Prof. Jaibhagwan Goyal is an eminent scholar of international repute in Hindi and Punjabi literature. He retired as Professor, Chairman of Hindi Department and Dean Faculty of Arts & Languages, Kurukshetra University. He has done path breaking research and enriched Hindi literature by bringing to light vast treasures of Medieval Hindi literature available in Gurumukhi script, unknown to the Hindi literary world. His literary biography has recently been published by an eminent Hindi scholar.

2. Born on 30th September, 1931, in the small town of Chhachhrauli in Yamunanagar district of Haryana, Prof. Goyal did Ph.D. in Hindi in 1964 from Punjab University and has over 35 years' experience of teaching post graduate classes. He has published 30 books and over 150 research papers.

3. Prof. Goyal was UGC Emeritus Fellow and was also the Chairman of Haryana School Education Board after retiring from the University. He has been a member of several academic and administrative bodies of some of the biggest Indian Universities. He has also been a member of State Level Coordination Committee on New Education Policy, Founder President of Haryana Hindi Sahitya Parishad and Member of several other literary, cultural and educational bodies.

4. Prof. Goyal rediscovered for the Hindi literary world, a 19th century poet of Haryana, Bhai Santokh Singh and his epic poems written in Gurumukhi script, consisting of about sixty thousand verses, based on the life and teachings of the ten Sikh Gurus. Through this poetry he highlighted sensibilities of heroism and spirituality enshrined in this literature not available elsewhere thus giving new interpretation to the history of Hindi literature of medieval period and presented vividly the cultural, philosophical, political and social history of the age imbued with the spirit of spiritualism, heroism, nationalism and humanism. He did extensive research on the writings of Guru Nanak Dev, Guru Arjun Dev, Guru Teg Bahadur and Guru Gobind Singh and other main sikh literature upto 19th century. His research and books have been recognized as works of great scholarship.

5. Prof. Goyal's publications have been highly commended and admired by all leading scholars and writers of Hindi and Punjabi, Sikh intellectuals and other eminent persons from all over the country. Most of his books have been published by Punjab University, Punjabi University, Kurukshetra University, Punjab Language Dept., Guru Gobind Singh Foundation, Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee and Haryana Granth Academy. Several of his books have been prescribed for M.A. and M.Phil. courses in various Universities. 25 candidates have been awarded Ph.D. under his guidance and about four dozen dissertations of M.Phil. have been produced under his supervision. He has evaluated a number of Ph.D./D.Litt. theses of various universities and acted as expert member on selection committees of several Universities and State Public Service Commissions. He has presented research papers at over 50 All India and international seminars and delivered several dozen literary radio talks. He has been the Chief Editor of over a dozen university textbooks. He has also published several articles on Haryanvi folklore, Hindi literature and Hindi journalism of Haryana.

6. Prof. Goyal has won several awards and Honours. Two of his books got first prizes by Haryana Government's language department and Haryana Sahitya Academy. He has been honoured by SGPC Amritsar, Kendriya Guru Singh Sabha, Punjab Hindi Academy, Pradeshik Hindi Sahitya Sammelan and several other organisations. He was honoured at the 2019 International Conference on Guru Nanak's Philosophy & Legacy which was organised in Delhi in association with SGPC Amritsar & Delhi Gurdwara Parbandhak Committee to celebrate the 550th Birth Anniversary of Guru Nanak Dev. He was also awarded Man of the Year Award by American Biographical Institute, Carolina, USA. His contribution is listed in Indo-American Who is Who; reference "International five hundred leaders of influence" of Indian writers.



प्रो. जयभगवान गोयल

प्रो. जयभगवान गोयल हिन्दी और पंजाबी साहित्य के अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान हैं। वह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर और अध्यक्ष तथा कला एवं भाषा संकाय के डीन के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। उन्होंने कई मौलिक अनुसंधान किए हैं और हिन्दी साहित्य जगत के लिए अज्ञात गुरुमुखी लिपि में उपलब्ध मध्यकालीन हिन्दी साहित्य की विशाल निधि की खोज की है। हिन्दी के एक प्रख्यात विद्वान ने हाल ही में उनकी साहित्यिक जीवनी प्रकाशित की है।

2. 30 सितंबर, 1931 को हरियाणा के यमुनानगर जिले के एक छोटे से कस्बे छछरौली में जन्मे, प्रो. गोयल ने 1964 में पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी में पीएच.डी. की और उन्हें स्नातकोत्तर कक्षाओं को पढ़ाने का 35 वर्ष से अधिक का अनुभव है। उनकी 30 पुस्तकें और 150 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हुए हैं।

3. प्रो. गोयल विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होने के बाद यूजीसी एमरेटस फैलो और हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष भी बने। वह भारत के कुछ सबसे बड़े विश्वविद्यालयों के शैक्षिक और प्रशासनिक संस्थाओं के सदस्य भी रहे हैं। वह नई शिक्षा नीति पर राज्य स्तरीय समन्वय समिति के सदस्य, हरियाणा हिन्दी साहित्य परिषद के संस्थापक अध्यक्ष और कई साहित्यिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्थाओं के सदस्य भी रहे हैं।

4. प्रो. गोयल ने हरियाणा के 19वीं सदी के कवि, भाई संतोख सिंह और गुरुमुखी लिपि में उनके महाकाव्य से हिन्दी साहित्य जगत का परिचय कराया। इस महाकाव्य में दस सिख गुरुओं के जीवन और शिक्षा पर आधारित लगभग 60 हजार पद हैं। इस काव्य कृति के माध्यम से प्रो. गोयल ने इस साहित्य में वीरता और आध्यात्मिकता को मौलिक रूप से उजागर किया। इस प्रकार उन्होंने मध्यकालीन हिन्दी साहित्य के इतिहास की एक नई व्याख्या प्रदान की तथा आध्यात्मिकता, शौर्य, राष्ट्रवाद और मानवता की भावना से ओत-प्रोत उस समय के सांस्कृतिक, दार्शनिक, राजनीतिक और सामाजिक इतिहास को विशद रूप से प्रस्तुत किया। उन्होंने गुरु नानक देव, गुरु अर्जुन देव, गुरु तेगबहादुर और गुरु गोबिन्द सिंह की कृतियों तथा 19वीं सदी तक के अन्य प्रमुख सिख साहित्य पर विस्तृत शोध किया। उनके शोध और पुस्तकों को अत्यंत विद्वतापूर्ण माना जाता है।

5. हिन्दी और पंजाबी के सभी प्रमुख विद्वानों और लेखकों, सिख मनीषियों और देश के अन्य प्रसिद्ध लोगों ने प्रो. गोयल के प्रकाशनों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। उनकी बहुत सी पुस्तकें पंजाब विश्वविद्यालय, पंजाबी विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पंजाब भाषा विभाग, गुरु गोबिन्द सिंह फाउन्डेशन, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी और हरियाणा ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित की गई हैं। उनकी अनेक पुस्तकें विभिन्न विश्वविद्यालयों में एम.ए. तथा एम.फिल. पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। उनके मार्गदर्शन में 25 विद्वानों को पीएच.डी. प्रदान की गई है और लगभग चार दर्जन एम.फिल. शोध प्रबंध उनकी देख रेख में तैयार किए गए हैं। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों के कई पीएच.डी./डी. लिट. शोध प्रबंधों का मूल्यांकन किया है तथा कई विश्वविद्यालयों और राज्य लोक सेवा आयोगों की चयन समितियों में विशेषज्ञ सदस्य के रूप में कार्य किया है। उन्होंने 50 से अधिक अखिल भारतीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं तथा कई दर्जन साहित्यिक रेडियो वार्ता प्रस्तुत की हैं। वह एक दर्जन से अधिक विश्वविद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों के मुख्य संपादक रहे हैं। हरियाणवी लोक कथा, हिन्दी साहित्य तथा हरियाणा की हिन्दी पत्रकारिता पर उनके कई लेख प्रकाशित हुए हैं।

6. प्रो. गोयल को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनकी दो पुस्तकों को हरियाणा सरकार के भाषा विभाग और हरियाणा साहित्यिक अकादमी का प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। उनको एसजीपीसी अमृतसर, केन्द्रीय गुरु सिंह सभा, पंजाब हिन्दी अकादमी, प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा कई अन्य संगठनों ने सम्मानित किया है। गुरु नानक देव का 550वां प्रकाशोत्सव मनाने के लिए एसजीपीसी अमृतसर और दिल्ली गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा दिल्ली में 2019 में आयोजित गुरु नानक दर्शन और विरासत पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में उन्हें सम्मानित किया गया था। उन्हें अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट, केरोलिना, संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा 'मैन ऑफ द ईयर' पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। उनके योगदान को इंडो-अमेरिकन हू इज हू; भारतीय लेखकों के 'इंटरनेशनल फाइव हंड्रेड लीडर्स ऑफ इंप्लूएंस' में सूचीबद्ध किया गया है।